(१०) पद

साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ।। ध्रु०।।

जाना तुमने जगत्पसारा, सबही झूठ जमाना ।।

साई० ।। १ ।।

मैं अंधा हूँ बंदा आपका, मुझको चरण दिखलाना ।।

साई० ।। २ ।।

दास गनू कहे अब क्या बोलूं, थक गई मेरी रसना ।।

साई० ।। ३ ।।